1-6-67 ओम् शान्ति प्रातः क्लास

बच्चो से पूछते है बच्चो आत्म-अभिमानी होकर बेठे हो? अपने को आत्मा समझ बेठ हो? हम आत्माओं
को परमपिता बाप पढा रेह है। बच्चो को यह स्मृती आई हेकि हम देह नही आत्मा है। बच्चों को देही
अभिमानी बनाने लिये ही मेहनत करानी पड़ती है। बच्चे आत्म-अभिमानी रह नही सकते। बार-2 देहअभिमान
मे आ जाते है। इसलिय बाप पूछते है कि आत्म-अभिमानी हो रेह हो? आत्माभिमानी होगें तो बेहद के
बाप की याद अवेगी। अगर देह-अभिमान होगा तो लौकिक सम्बन्धयों की याद अवेगी? पहले-2 यही
सबक सीखना पड़ता है कि हम आत्मा है। हम आत्मा ही एक शरीर छोड़ कर दुसरा लेती है। मुझ आत्मा
मे ही 84जन्मों का पाॅट भरा हुआ है। यह पक्का करना है कि हम आत्मा है। आधा कल्प तुम देहअभिमनी
रेह हो। अभी सिर्फ संगम पर ही बच्चो को आत्म-अभिमानी बनाया जाता है। अपने को देह समझने पर
कब बाप याद नही अवेगा। इसलिय ह पहले-2 यह सबक पक्का कर लो कि हम आत्मा बेहद के
बाप की बच्ची हूं। देह के बाप को याद करना सिखाया नही जाता है।अब बाप कहते है कि मुझे
पारलौकिक बाप को याद करो। आत्मअभिमानी बनो। देह अभिमानी बनने पर देह के सम्बन्धी याद आवेंगें।
अपने को आत्मा समझो।और बाप को याद करना यही मेहनत है।यह कोन समझा रेह है? हम आत्माओं
का बाप। जिनको ही सब याद करते है। बाबा आओं। आकर इस दुःख से लिबरेट करो। बच्चे जानते है
कि इस पढाई से हम भविष्य के लिये ऊंच पद पाते है। अभी तुम पुरषोतम संगम पर हो। इस मृत्यु लोक
मे अब बिलकुल भी रहना नही है। यह हमारी पढाई है ही भविष्य 21जन्म लिये।हम सतयुग अमरलोक के
लिये पढ़ रेह है। अमर बाबा अमर ज्ञान सुना रेह है। तो यहां जब बेठते हो तो पहले-2 अपने को आत्मा
समझो। बाप की याद मे रहना है।तो विकर्म विनाश होगें! हम अभी संगम युग पर है। बाबा हमको
पुरषोतम बना रेह है। कहते है मुझे याद करो तो तुम पुरषोतम बन जावेंगें। मे आया ह हूं मनुष्य से
देवता बनाने। देवतायें होते ही है सतुयग मे। दुख.. बकता थे। अभी जानते हो कि कैसे हम सीढी उतरे
है? हमारी आत्मा मे ही 84जन्मों का पाॅट नूंधा हुआ है। दुनियां में कोई की वुधी मे भी यह बात नही
है। यह है ज्ञान मार्ग। भक्ति मार्ग ही अलग है। जिन आत्माओं को बाप पढातेहै वो ह जाने और नां जाने
कोई। यह है गुप्त खज़ाना। भविष्य के लिये। तुम पढ़ते ही हो अमर लोक के लिये। नां कि इस मृत्यु
लोक के लिये। अब बाप कहते है कि सवेरे उठ कर घूमो फिरो और पहला-2 यही सबक याद याद करो
कि हम आत्मा है नां कि शरीर।हमारा बाबा हमको पढाते है।यह दुःख की दुनियां अब बदलती है।
सतयुग है सुख की दुनियां। वुधी मे सारा ज्ञान है। यह हैअविनाशी नालेज।स्प्रिचुअल नालेज। बाप ज्ञान क
का सागर स्प्रिचुअल फादर है। वो है देहीका बाप। बाकी तो सब देह के ही सम्बन्ध है।अभी देह
के सम्बन्ध सब छोड बस एक ही से जोडना है। गाते भी हैमेरा तो एक दुसरा नां कोई पहले-2 यही
सबक याद करना है कि हम आत्मा है। बाबा इस शरीर मे आकर हम आत्माओं को पढ़ाते है। हम एक
बाप को ही याद करते है।देह को भी याद नही करते। देह जो पुरानी है वो तो छोड़नी ह है। यह
भी तुमको ज्ञान मिलता है कि यह शरीर कैस छोड़ना है। याद करते-2 शरीर छोड़ देना है। इसलिय बाप क
कहते है देही-अभिमानी बनो। अपने को कूटते रहो। बाप बीज और झाड को याद करना है।शास्त्रो मे भी
कल्प वृक्ष का वर्णन है। यह भी बच्चे जानते है कि हमको ज्ञान सागर बाप पढा रेह है।कोई मनुष्य
नही पढ़ाते है।नही पढ़ाते है। यह पक्का कर लेना है।पढना तो है नां। सतयुग मे भी यहपढ़ाते है।
परन्तु यह देहधारी नही है. परन्तु यह तो कहते है कि मे पुरानी देह का आधार लेकर मे तुमको पढाता
हूं। फिर कल्प बाद भी ऐस ही पढाऊंगा अब मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होगें।मे ही
पतित पावन हूं। मुझे ही सब शक्तिवान कहते हो। परन्तु माया भी कम शक्तिवान नही है। कहां से
गिराया है। अब याद आता है, नां? 84का चक्र का गायन भी है। मनुष्य के लिये। मनुष्य के लिय ही कहा
जाता है जनावर के लिये थोडेई कहा जाता है। मनुष्यों की ही बाते है। बहुत पूछते है कि जनावरो का

क्या होगा?और यहां तो जनसवरो की बात ही नही। बाप भी बच्चो से ही बात करते है। बाहर व को जा नते ही नही है तो वो क्या बात करेंगें। कोईकहेंगें हम बाबा से मिलना चाहते है। अब जानते कु भी नही है। बैठ कर उल्टा सुल्टा प्रशन करेंगें। सात दिन पुर कोस करने के बाद भी समझनही सकते है कि यह हमारा बेहद का बाप है। समझा जाता है कि जिन्होने बहुत भक्ति की होगी उनकी बुधी मे ज्ञान बैठेगा। भक्ति कम की होगी तो उठावेंगें जी नही।तुम हो सबेस जास्ती भक्ति किये हुवे। गाया भी जाता है कि भगवान भक्ति का भक्तो को फल देते है।परन्तु किनको यह नही जानते है। ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग बिलकुल ही अलग-2 है। सारी दुनियां है भक्ति मार्ग मे। कोटोमे कोऊ आकर यह पढ़ते है। समज्ञानी तो बहुत मीठी है। 84जन्मों के चक्र को भी तो मनुष्य ह जानेंगें नां। तुम समझते हो कि आगे हम कुछ भी नही जानते थे। शिव को भी नही जानते थे। शिव के मन्दिर कितेन ढेर है। शिव की पुजा करते जल डालते। शिवायनमः करते, क्यो पुजते है कुछ भी पता नही है। ल-न की क्यो पुजा करते है वो अब कहां गये वो कुछ भी पता नही है। भारतवासी ही है जो अपने पुज्य को बिलकुलही जानते नही है। कि क्रिश्चन लोग जानते है कि हमारा क्राईस्ट कब आया। और कब आकर स्थापना की। शिव बाबा को भी कोई नही जानते है। जो होकर जाते है उनकी ही फिर पुजा होती है। सबसे जास्ती शिव की पुजा होती है। जरुर कुछ करके गया होगा। पतित पावन भी शिव को ही कहते है। वो ही ऊंच ते ऊंच हुआ नां। सबेस जास्ती सेवा करते है।सब का सदगति दाता है नां।तुमको देखो कैस पढ़ाते है। बाप को बुलाते हो है कि आकर पावन बनाओं। मन्दिरो मे कितनी पुजा करते है। कितनी धाम धूम मचाते है। खर्चा करते है। श्रीनाथ के मन्दिर मे जगन्ननाथ के मन्दिर मे जाकर देखो। है तो एक ही। जगतनाथ के पास चावल की कुन्नी चढ़ाते है। और वहां तो बहुत माल बनाते है फर्क क्यो हुआ है। कारण होना चाहिये नां? श्री नाथ को भी काला तो जगतनाथ को भी काला कर देते है। कारण तो कुछ भी नही समझते। जगतनाथ ल-न को ही कहते है वां राधा कृष्ण को कहें। राधा कृष्ण और लन का सम्बन्ध क्या है वो भी कसेई नहि जानते है। अभी तुम बच्चो को पता है कि हम पुज्य देवता थे फिर पुजारी बने है। हम भारतवासी ही 84जन्म लेते है।हमने चक्र लगा कर पुरा कियाहै।अभी फिर सो देवता बनने के लिये हम पढ़ते है।यह कोई मनुष्य नही पढ़ाते है। भगवानोवाच है।ज्ञान सागर भी भगवान को ह कहा जाता है। यहां तो भक्ति के सागर बहुत है। पतित पावन ज्ञान का सागर बाप को ह याद करते है। अब तुम समझते हो कि पतित बने है।फिर पावन जरुर बनना है। यह है ही पतित दुनियां।यह स्वर्ग नही है। वैकुण्ठ कहा है यह भी कोई को पता नही है। कहते है वैकुण्ठ गया तो फिर नर्क का भोजन आद आप उनको क्यो खिलात हो। सतयुगमे तो बहुत ही फल फूल होते है। यहां पर क्या है।यह है ही नर्क।अब तुम जानते हो बाबा दवारा हम स्वर्गवासी बनने पुरषार्थ कर रहे है। पतित से पावन बनना है। बाप ने युक्ति तो बताई है। कल्प-2 बाप यह ह युक्ति बताते है।मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होगें। अभी तुम जानते हो हम पुरषोतम युग पर है। तुम्ही कहते हो बाबा 5000वर्ष पहले भी आपेस सुना था। आगे थोडेई ऐसे कहते थे। ऐसा कोई नां कह सके। यह वेद शास्त्र आद 5000वर्ष पहले सुने थे। तुम्ही जानते हो कल्प-2 यह अमर कथा बाबा से सुनते है। शिव बाबा ही अमरनाथ है। बाकी ऐसे नही कि पार्वती को बैठ कर कथाए सुनाते है। वो है भक्ति। ज्ञान और भक्ति को तुमन ने ही समझा है। ब्रहमा का दिन और ब्रहमा की रात बाप समझाते है। तुम ब्राहम्ण हो नां। आदी देव भी ब्राहम्ण ही था। देवता नही कहेंगें। आदी देवी पास भी जाते है नां। देवियों के भी कितेन नाम है। तुमने सर्विस की है तब तुम्हारा गायन है। आधा कल्पयही भक्ति मार्ग चलता है। भारत जो कब क्राईसलेसा था वो फिर विषयश बन जाता है। अभी रावण राज्य है नां। रावण को जलाते है। समझाते वां समझते तो कुछ भी नही है। कहते है रावण को मारने लिये भगवान रामचन्द्र ने बन्दरो की सेना ली। देखो नां कितेन बडे गपोडे। लिख दिये है। और कितने भावना

से बैठसुनते है। सत्-सत करते रहते है। वास्तव मे है सब ही झूठ। भारत ही सच्च खण्ड था। अभी झूठ खण्डहै। तुम बच्चे अभी समझते हो हम संगम युग पर पुरुषोतम बन रहे है। तुम बच्चों पर अब अविनाशी वृक्षपतिकी दृसा बैठी है। वो ही तुमको पढा रहे है। मनुष्य से देवता बनाने स्वर्ग का मालिक बनाने को वृक्षपति की दसा कहा जाता है। तुम स्वर्ग मे अमर पुर मे तो जरर ही जावेंगें। बाकी पढाई मे दसाये उपर नीचे होती रहती है। याद ही भूल जाते है। गीता मे भी भगवानोवाच्च है। काम महाशत्रु है। पढ़ते भी है परन्तु विकारो को जीतते थोडेई है। गीता सुनाने वाले दुवद ह पतित है। भगवान ने कब कहा? 5000वर्ष हुआ। अब फिर भगवान कहते है कि काम महाशत्रे है। इसपर जीत पहननी है। यह आदि मध्य अन्त दुःख देने वाला है। मुख्य है काम की बात।। इस पर ही पतित कहा जाता है। क्रोध आद तो थोडा बहुत चलता ही रेहगा। बच्चो को कान से नही पकडेंगें तो सीधे नही होगें। वो किया जाता है कल्याण के लिये। मुख्य पाप है विकार की बात पर। यह है ही पापात्माओं की दुनियां। सतुयग है पुण्यात्माओं की दुनियां। बच्चो को तो पहेल यह पता नही था कि हम ही पुण्यात्मा हमी पापात्मा बने है अभी पता पडा है। यहचक्र फिरता है। हम पतित बनते है फिर बाप आकर पावन बनाते है। ड्रामा अनुसार। बाबा बार-2 कहते है कि पहले-2 अल्फ की बात याद करो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। श्रीमत पर चलेन से ही तुम श्रेष्ट बनते हो। यह भी तुम समझते हो कि हम पहले श्रेष्ट थे फिर भ्रष्ट बने है। अब फिर श्रेष्ट बनेन का पुरुषार्थ कर रेह है। दैवी गुण धारन करते है। किनको भी दुःख नही देना है। सबको रास्ता बताते ही जाओ। बाप कहते है कि मुझे याद करो तो पाप कट जावे। पतित पावन तो मुझ ही कहते हो नां? यह कोई कोई को पता नही है कि पतित पावन कैसे आकर पावन बनाते है। अभी तुम समझते हो कि कल्प-2 पहले भी बाप ने कहा था कि मामेकम याद करो। यही योगाग्नी है। जिससे ही पाप भस्म होते है। खवदनिकलेन पर आत्मा प्योअर बन जाती है। खादपडसेने मे ही पड़ती है। फिर ज़ेवर भी वैसा बनता है। अभी तुम बच्चो को बाप ने समझाया है आत्मा मे कैसे खाद पडी है उसको निकलना है। बाप का भी ड्रामा मे पॉर्ट है। जो तुम बच्चो को आकर देहीअभिमानी बनाते है। पवित्र भी बनाते है। तुम जानते हो सतुयग मे हम वैष्णव थे। पवित्र गृहस्थाश्रम था। अभी है अपवित्र। अब फिर पवित्र बन कर और हम विष्णु पुरी के मालिक बनते है। तुम डबल वैष्णव बनेत हो। सच्चे-2 वैष्णव तो तुम हो। वो है विकारी वैष्णव धर्म के। तुम निर्विकारी वैष्णव धर्म के। अभी तुम विष्णु पुरी के मालिक बनते हो। एक तो बाप को याद करते हो। और नालेज जो बाप से है वो तुम भी धारन करते हो। तुम राजाओं का राजा बनते हो। वो राजाये तो बनते है अल्प काल के लिय। एक जन्म के लिय। तुम्हारी राजाई है 21 पीढी। अर्थात फुल रेज पास करते हो। वहां पर कक अकाले मृत्यु नही होगा। तुम काल पर जीत पहनते हो। समय जब होता है तो समझते हो कि अब यह पुरानी खल छोडकर नई लेनी है। तुमको सा0 होगा। खुशी के बाजे बजते रहते है। तमोप्रधान शरीर को छोड सतोप्रधान शरीर लेना यह तो खुशी की बात है नां। वहां 150 वर्ष आयु रहती थी। यहां तो दखो कैसे-2 अकाले मृत्यु होती रहती है। क्योकि भोगी है। अभी तुम योगबल से सब कर्मइन्द्रयों को वश मे कर सकते हो। परन्तु यह अवस्था बादमे होती है। योग मे पुरा रहेने पर सब कर्म इन्द्रिया वश मे रेहगी। सतुयग मे तुमको कोई कर्मइन्दियां धोखा नही देती। कब ऐसे नही कहेंगें कि वा मे नही है। तुम बहुत उंच पद पाते हो। इसको ही कहा जाता है वृक्षपति की अविनाशी दसा। वृक्षपति मनुष्य सृष्टी की बीज रुप बाबा है नां। बीज है उपर मे। उनको याद भी ऊंपर मे ही करते है। आत्मा बाप वो याद करतीहै। अभी तुम बच्चे जानते हो कि बेहद का बाप जो पढ़ाते है वो आते ही एक बार है। आते ही है अमरकथा सुनाने। अमरकथा कहो वां सत्यनारायण की कथा कहो। अमरनाथ का भी अर्थ नही समझते है। सत्य नारायण की कथा सु नर से नारायण बनते हो। अमर कथा से तुम अमरबनते हो। बाबा तो हर एक बात क्लीयर कर बताते रहते है। अच्छा गुडमानिंग॥